Vol 4 Issue 6 March 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN:-2249-894X
Impact Factor : 3.1402(UIF)
Vol. 4 | Issue. 6 | March 2015
Available online at www.ror.isrj.org

स्वप्न एक मनोवैज्ञानिक चिंतन

साध्वी–प्रशंसाश्री"मोक्षा"

सारांश : चेतन–अचेतन तत्वों पर स्वप्नों का प्रभाव–

स्वप्न क्या है ?

स्वप्न क्या है ? क्यों आते हैं ? इनका क्या परिणाम होता हैं ? से किस प्रकार के संकेत देते हैं ? सभी को भिन्न–भिन्न स्वप्न क्यों आते है ? ये काल्पनिक होते हैं,प्रतीकात्मक होते है अथवा वास्तविक ? इसकी संपूर्ण खोज अभी तक नहीं हो पाई है। इस पर अब तक जितनी आध्यात्मिक एवं मनोविज्ञान जगत् में खोजें हुई हैं तथा वैज्ञानिक–मनोवैज्ञानिक जितने रहस्यों को प्रकट किया गया है, वे अपूर्ण हैं फिर भी इनके आधार पर कई महत्वपूर्ण तथ्यों का पता चला है।

प्रस्तावना :

स्वप्न वास्तव में मन की क्रियाओं, उसकी वृत्तियों, भावनाओ एवं उसकी क्रिया प्रणाली का ही एक अंग है। ये मन की अभिव्यक्ती एवं उसकी वृत्तियों का प्रक्षेपण ही है। जीवन का संपूर्ण रहस्य मन में छिपा है, जिसकी अभिव्यक्ति ही जीवन की क्रियाओं का संचालन करती है। स्वप्न मन की ही एक अवस्था है, जिसके माध्यम से मन अपनी अभिव्यक्ति देता है।

स्वप्न का अर्थ एवं परिभाषा–

व्यक्ति निद्रावस्था में स्वप्न देखता है। नींद टूटने पर कुछ स्वप्न उसे याद रहते है और कुछ वह भूल भी जात है। निद्रावस्था में चेतना निष्क्रिय हो जाती है, फिर स्वप्न आते है, क्योंकी चेतना के निष्क्रिय होने से उसकी लगाम ढीली पड जाती है, फलस्वरुप अचेतन कियाशील हो जाता है और स्वप्न के रुप में इच्छाओं की पूर्ती होने लगती है। जैसे ही हमारा चेतन मन सो जाता है, वैसे ही अचेतन मन सक्रिय होकर अपने सपनों के दल–बल सहित हमारे चेतना पटल पर आ धमकते है। व्यक्ति स्वप्नों में अपने आपको दुःख ही हालत मे देखता है,तो कभी आनंद की अवस्था में स्वप्नों की विभिन्न प्रकार की अनुभूतियॉ होती है । स्व्नों का अर्थ जानने के लिये प्रायः सभी लोक उत्सुक रहते है । स्वप्नों का सबंध व्यक्ति के अनुभवों और व्यक्तित्व से होता है ।

भगवती सूत्र की टीका में भी उल्लेख है कि सुप्तावस्था में जिस किसी भी अर्थ के विकल्प के प्राणी को जो अनुभव होता है स्वप्न कहलाता है । व्यक्ति के सुप्त जागृतावस्था में जिस किसी भी पदार्थ संबंधी विकल्प का जो अनुभव होता है तथा चलचित्र देखने जैसा प्रत्यक्ष होता है, उसे स्वप्नदर्शन कहते है । स्वप्न कौन देखता है? इसका उत्तर देते हुए भ. महावीर ने कहा– "सुत्तजागरे सुविणं पासई ।" अर्थात जो सुप्त–जागृत होता है ऐसा वह व्यक्ति इंद्रियादि से उपरत हुआ और मनोमात्र व्यापारवाला बना हुआ ही स्वप्न देखता है ।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने स्वप्न को परिभाषित करने के लिए अलग–2 परिभाषायें दी है, जो निम्नलिखत हैः–

1)फिशर (Fisher, 1965) के अनुसार–"निद्रावस्था में मानसिक क्रियायें लगातार चलती रहती है और स्वप्न इन लगातार होने वाली मानसिक प्रकियाओ की एक अवस्था विशेष हैं।"
2) ब्राऊन (Brown,1960) ने स्वप्न को परिभाषित करते हुए लिखा है–"स्वप्न वे विभ्रम हैं,जिनका अनुभव हम सबको प्रतिरात होता है और जब हम जागते हैं, तो उनका विभ्रमात्मक स्वरुप हमें स्पष्ट हो जाता है ।"
3) फ्रायड (s. Frued) के अनुसार –"स्वप्न वह प्रक्रिया है,जिसके द्वारा अचेतन मन की इच्छायें चेतन मन में बदले हुए रुप में प्रवेश करती है ।
4) जेम्स ड्रेवर (James Drever,1968) ने कहा है – '"स्वप्न विभ्रमात्मक अनुभवों की वह गाडी है,जिसमें कुछा मात्रा में सांमजस्य स्वभाव पाया जाता है,लेकिन बहुधा स्वप्न अस्पष्ट या निद्रावस्था में होते है अथवा समान परिस्थितियों में होते है ।"'

5) आइजनेक एवं उनके सहयोगियों (eysenck, et. al.1972) के अनुसार– "'स्वप्न निद्रावस्था के अनुभव हैं,जो व्यक्ति के कल्पनात्मक जीवन का एक आंशिक प्रकार हैं ।
6) सी.जी. युंग ने स्वप्न को परिभाषित करते हुए कहा है –''स्वप्न व्यक्ति की केवल अतृप्त,दमित इच्छाओं से ही संबंधित नहीं होत वरन् भविष्य के भी द्योतक होते है ।''

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर स्पष्ट होता है कि–स्वप्न दैनिक जीवन के अनुभवों के संबंध में हो सकते हैं तथा दमित इच्छाएँ भी अपना रुप बदलकर चेतन मन में आ सकती है । स्वप्नों का विश्लेषण कर व्यक्ति की मानसिक स्थिति,विचार,व्यवहार और व्यक्तिमत्व का पता लगाया जा सकता है।

स्वप्नों की विशेषताएँ–

उपरोक्त विवेचन के आधार पर स्वप्नों की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैः–
1) स्वप्न सार्थक होते है ।
2) स्वप्न विभ्रमात्मक होते है ।
3) स्वप्न प्रतिकात्मक होते है ।
4)स्वप्नों में दमित इच्छापूर्ति का प्रयास रहता है।
5) स्वप्न अचेतन मन से संबंधित होते है।
6)स्वप्न आत्मकेंद्रित होते है ।
7)स्वप्न दृश्यात्मक प्रतिमाओं से बने होते हैं ।
8)स्वप्न भविष्य की घटनाओं का संकेत देते हैं ।
9)स्वप्न जागृत अवस्था की पुनरावृत्ति मात्र हैं ।
(विस्तार भय से यहाँ मात्र स्वप्नों की विशेषताओं का उल्लेख ही किया गया है ।विशेष ''आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान ''पुस्तक में देखे ।)

स्वप्न का मनोवैज्ञानिक महत्व

स्वप्न निद्रा में सहायक है। लोग कहते है कि स्वप्नों के कारण नींद नहीं आती । किंतु फ्रायड ने सिध्द किया है कि स्वप्न न हों, तो नींद का बने रहना ही असंभव हो जाये। स्वप्न नींद को बनाये रखने मे सहायक है। उदाहरणतः कभी–कभी नींद में हमको जोरों की प्यास लगती है । ऐसी दशा में यदि स्वप्न न हों, तो तत्काल नींद खुल जाती है, किंतु हमें स्वप्न दिखाई देता है कि हम पानी पी रहे हैं, और कुछ समय तक हमारी नींद बनी रहती हैं। इसी प्रकार मानसिक इच्छायें और प्रवृत्तियाँ भी नींद से अभिव्यक्त होती हैं और नींद को बनायें रखती है । उदाहरणतः परीक्षा के भय एवं चिंता से व्याप्त विद्यार्थी को परीक्षा संबंधी स्वप्न दिखाई देता है, जिनके द्वारा भय एवं चिंता की अभिव्यक्ति होती रहती है। इस प्रकार स्वप्न में हमारी सुखद–दुःखद सभी इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति होती है और इससे मानसिक शान्ति मिलती है । यदि इनके निकलने का यह स्वाभविक मार्ग न हो और ये इच्छाएँ और कामनायें किसी असमान्य व्यवहार के रुप में प्रकट हों, तो व्यक्ति की अनुकूलता में अनेक बाधायें उपस्थित हो जायें । स्वप्न इनके निकलने का सबसे अधिक सरल उपाय है । इसमें न तो दीवास्वप्नों के समान समय व्यर्थ होता है और न भूलों के समान हानि होती है और न असामान्य व्यवहार के समान अनुकूलता में बाधा होती है।

मनोविश्लेषण विज्ञान में स्वप्नों का विश्लेषण करके मनुष्य की अनेक असामान्य व्याधियों के कारणों का पता लगाया जाता है। इसमें व्यक्ति अपनी बुध्दि द्वारा स्वप्न की भिन्न –2 वस्तुओं की साहचर्य द्वारा व्याख्या करता है। इससे उसके अचेतन मन की दशा ज्ञात होती हैं, जिससे मानसिक व्याधियों के कारणों का पता लगाने में सफलता मिलती है।

हम स्वप्न क्यों देखते हैं?

स्वप्न तो सभी देखते हैं, पर अधिकतर लोग यह जानने के लिए उत्सुक रहते हैं कि स्वप्न क्यों आते हैं ? हम प्रतिदिन स्वप्न देखते हैं अतः स्वप्न पर विचार करना अपने आपको जानने के लिए आवश्यक हैं। इसके द्वारा अचेतन मन की क्रियाओं का पता चलता हैं। मनुष्य के मन में स्वभावजन्य अनेक प्रकार की इच्छाएँ होती हैं। इनमे से अधिकांश इच्छाओ की पूर्ति हमारे जागृत अवस्था में हो जाती है और वे शांत हो जाती है, किंतु जिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती, वे शांत नहीं होती,बल्कि अनेक प्रकार की मानसिक उत्तेजनाओं का कारण बनती है। उत्तेजना मनुष्य के अचेतन मन में स्थिर रहती हैं और अवचेतन अवस्था (नइ. बवदेबपवनें जंजम)में प्रकाशित होने की चेष्टा करती हैं, जिसके फलस्वरुप हम स्वप्न देखते हैं।

''स्वप्नानुसार समुच्चय में स्वप्न आने के प्रमुख नौ कारण–

मनुष्यों को नौ कारणों से स्वप्न आते हैं।–1) जानी हुई बात 2) देखी हुई बात 3) सुनी हुई बात 4) वात,पित्त कफ के विकार से 5) मल–मूत्र की बाधा रोकने से 6) चिन्ता करने से। इन छः कारणों से आये हुए स्वप्नों का कोई शुभाशुभ फल नहीं

मिलता।

वायु विकार के कारण वृक्ष,पर्वत या टीलों पर चढना,आकाश में उडना आदि स्वप्न आते हैं। पित्त के प्रकोप से सुवर्ण,रत्न,सूर्य,अग्नि,आदि अनेक प्रकार के स्वप्न देखता है।कफ की प्रबलता के कारण अश्व,नक्षत्र,चन्दमा,शुक्ल पक्ष,नदी,सरोवर,समुद्र इत्यादि लांघना, देखता हैं, ये सब निरर्थक और निष्फल होते है।

7) देव के विशिष्ठ अनुष्ठान करने से 8)प्रबल(अधिक)पुण्योदय के योग से 9)प्रबल (अधिक) पापोदय के कारण। इन तीन कारणों से आये हुए स्वप्न शुभाशुभ फल देते है।

स्वप्नसार समुच्चय में स्वप्न आने के अन्य कारण–

जब हम किसी गन्दे और बदबुदार कमरे में सोते हैं, अथवा गन्दे कपडों को ओढकर सोते हैं, तो अप्रिय स्वप्न देखते है। मुँह ढँककर सोने से बुरे स्वप्न आते है । हमारी साँस से निकली दुर्गध फिर हमारे दिमाग में आ जाती है और बुरे स्वप्नों को पैदा करती हैं । शयन कक्ष में यदि बाहर का शोरगुल सुनाई देता है,तो एक विशेष प्रकार के स्वप्नों का कारण बन जाता है । शयनकक्ष मे यदि बाहर से आने वाली आवाज कर्णप्रिय, मंन्त्रमुग्ध करनेवालीं हों, तो दुःखदायी स्वप्न आते है । इस प्रकार स्वप्न हमारी शारीरिक उत्तेजनाओं कारण बनते है।

कभी–कभी स्वप्न में आनेवाली बीमारी भी दिखाई देती है । यह बीमारी संभव है कि उसी रुप में वह आनेवाली है । स्वप्न में कोई बडा राक्षस पीडा देता हुआ दिखाई दे या कोई भूत हमें सता रहा हो,ऐसे स्वप्न आनेवाली बीमारियों के सूचक होते हैं । इन स्वप्नों कारण शारीरिक उत्तेजनाएँ होती हैं ।

हमारे अचेतन मन की शक्ति चेतन मन की शक्तियों से कही अधिक है । हमारे मन की कअचेतन अवस्था में शरीर उन अनेक विकारों को जान लेते हैं,जिनके भविष्य में बीमारी के रुप में प्रगट होने की संभावना हो ।

भारतीय मनोविज्ञान में स्वप्न के कारण –

भारतीय मनोवैज्ञानिकों के अनुसार स्वप्न के अनेक कारण हो सकते हैं :–

1) वात,पित्त तथा कफ धातुओं के दोष के कारण स्वप्न उत्पन्न होते हैं ।

2) किसी तीव्र इछा के कारण स्वप्न में इच्छित वस्तु दिखलाई देती है।

3) धर्म और अधर्म के कारण भी कुछ स्वप्न दिखलाई देती है ।

4)कुछ स्वप्नों से भविष्य की सूचना मिलती है । ये स्वप्न अदृष्ट के कारण होतें है ।आधुनिक फ्रायडवादी मनोविश्लेषण शास्त्र की तरह की भारतीय दर्शन में मन के अवचेतन भाग की कल्पना की गई हैं,जिसे संस्कार कहते हैं। सारे स्वप्न इसी संस्कार की देन हैं ।

क्या कहता है स्वप्न मनोविज्ञान?

मनोविज्ञानिकों के अनुसार स्वप्न के मनोदैहिक सिध्दांत–

स्वप्न सिध्दांतो को मुख्यरुप से दो भागों में विभाजित किया गया हैं–

1) दैहिक सिध्दांत

2)मनोवैज्ञानिक सिध्दांत

1) दैहिक सिध्दांत–(physiological Theory)

दैहिक सिध्दांत वह सिध्दांत है? जो स्वप्न की व्याख्या दैहिक या शारिरीक प्रक्रियाओं के आधार पर करता है। यह सिध्दांत यह मानता है कि स्वप्न बाहय तथा आन्तरिक उत्तेजकों के प्रभव से ही उत्पन्न होते हैं। शयन करने पर शारीरिक मुद्रा ;ठवकपसल च्वेजनतमद्ध भी उत्तेजक के रुप में आ सकती है। जैसे–कष्टदायक मुद्रा में सोना,सोते समय हाथ–पैर फैलाकर रखना आदि। सार्जेन्ट ने भी कहा है– ''स्वप्नद्रष्टा उत्तेजकों को ग्रहण करता है,परंतु उसका सोया मन उसके अर्थ को स्पष्ट नहीं कर पाता है ।'' आगे उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति रात्रि में बहुत अधिक खाकर सोता है और उसकी पाचन–क्रिया में गडबडी हो जाती है, तो उसके हृदय की गति भी तीव्रहो जाती है और इस अवस्था में ऊँची जगह से गिरने या किसी भयंकर घटना का वह स्वप्न देखता है । रॉबर्ट ;त्वइमतजद्ध ने भी स्वप्न को एक शारीरिक क्रिया के रुप में मना है ।उनका कथन है कि जाग्रत जीवन के अपूर्ण विचार तथा ऐन्द्रिक प्रभावों से जो बोझ एकत्र हो जाता है, वह स्वप्न की अवस्था में हल्का हो जाता है । इस प्रकार स्वप्न मस्तिष्क की ऐंद्रिक प्रभावों के बोझ से रक्षा करते है।

फ्रायड नें दैहिक सिध्दांतो की मान्यता को अस्वीकार कर स्वप्न के एक नवीन मनोवैज्ञानिक सिध्दांत का प्रतिपादन किया । उसने अपनी पुस्तक स्वप्न–विश्लेषण'' में स्वप्नों की विशद व्याख्या प्रस्तुत की और बतलाया कि ''स्वप्न का संबंध मनुष्य की वृत्तियो के साथ होता है । उसने कहा कि ''स्वप्न निरर्थक तथा अनुपयोगी नहीं होते हैं,बल्की सार्थक एवं उपयोगी होते है।'' इसलिए उसके स्वप्न–सिध्दांत को इच्छापूर्ति का सिध्दांत(Wishfullfillment theory) कहा है। फ्रायड ने कहा कि स्वप्न से व्यक्ति की अतृप्त अचेतन इच्छाएँ संतुष्ट होती है। स्वप्न के स्वरुप को स्पष्ट करते हुए उसने कहा–''स्वप्न हमारी निद्रावस्था की

वह अचेतन मानसिक प्रकिया है,जिसके द्वारा हमारे अचेतन मन में दमित इच्छाओं की अभिव्यक्ति एवं संतुष्टि गुप्त रुप से होती है।

स्वप्न की व्याख्या के लिए उसने मन तीन पहलुओं–चेतन,अर्ध्दचेतन पर विशेष जोर दिया है। उसके अनुसार, जागृतवस्था में अचेतन और अर्ध्दचेतन के बीच आदर्श भावना प्रतिरोध का कार्य करती रहती है। इसलिए अनैतिक,असामाजिक तथा अनुचित विचार एवं इच्छाएँ हमारी चेतना में नहीं आ पाते हैं और उनका दमन हो जाता है। दमित होकर अचेतन मेंसक्रिय और प्रबलरुप धारण करके चेतन में आने के लिए तत्पर रहती है और अवसर पाकर वे अपना रुप बदलकर प्रकट हो जाती है। जब निद्रावस्था में प्रतिरोध की क्षमता शिथिल हो जाती है ,तो बाहरी परिस्थितियों तथा आन्तरिक प्रतिरोधों के अनुशासन हीनता से दमित इच्छाएँ अपना रुप बदलकर स्वप्न मे अपनी संतुष्टी करती है। इस प्रकार फ्रायड ने अपने सिध्दांत में इच्छाओं की संतुष्टि तथा छद्म रुप पर विशेष बल दिया है। क्योंकि स्वप्न में व्यक्ति की अपनी ही अतृप्त इच्छाएँ प्रकट होती है,परंतु उन अचेतन इच्छाओं की अभिव्यक्ति स्वप्नों में वास्तविक न होकी गुप्त होती है ।इसलिए व्यक्ति स्वप्न देखने के बाद स्वंय भी यह विश्वास नही कर पाता कि वे उसी की इच्छाएँ है।

युंग का स्वप्न सिध्दांत–

युंग के अनुसार,जीने की इच्छा (will to live) ही व्यक्ती की मौलिक इच्छा है । इस इच्छा की पूर्ति के लिए ही व्यक्ति क्रियाशील रहता है। जब तक इच्छा पूर्ति में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं होती तब तक इसमें उन्नति देखी जाती है।किंतु जब इस इच्छा शक्ति में रुकावट आ जाती है,तो यह आगे बढने के बदले पीछे मुड जाती है,जिसे प्रतिगमन के कारण इच्छा शक्ति–चेतन से अचेतन में चली जाती है। स्वप्न में यही इच्छा–शक्ति अपना रुप बदलकर अभिव्यक्त होती है। युंग के अनुसार स्वप्न में किसी भी प्रकार की इच्छा पूर्ति हो सकती है।

फ्रायड के समान युंग भी स्वप्नो पर अचेतन प्रभाव को स्वीकार करता है,परन्तु अचेतन के सम्बन्ध में इनका विचार फ्रायड से नही मिलता है । युंग ने अचेतन के दो भाग किये है–

1) व्यक्तिगत ***अचेतन***(Personal unconscious)***तथा 2)*** जातीय या सामूहिक ***अचेतन*** (Racial or collective unconscious) युंग का कथन है कि प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तिगत अचेतन भिन्न –2 होता है। परन्तु सामूहिक अचेतन पूरी मानव जाति में एक समान पाया जाता है। वह व्यक्तिगत अचेतन का विकास जन्म के बाद होता है,लेकिन सामूहिक अचेतन व्यक्ति के जन्म के साथ आता है। व्यक्तिगत अचेतन में अधिकतर व्यक्ति की दमित इच्छाएँ रहती हैं और जातीय या सामूहिक अचेतन में संस्कार (archetypes) के रुप में पूर्वजों की इछाएँ तथा अनुभव आते रहते है। अतः जातीय अचेतन में संचित ये संस्कार प्रायः स्वप्नों मे प्रकट होते है। युंग ने बताया कि स्वप्न संबंध वर्तमान तथा भविष्य में होनेवाली घटनाओं से भी रहता है और चेतावनी के रुप मे भी होता है।

एडलर का स्वप्न सिध्दांत–

एडलर ने बताया कि स्वप्न में मानसिक संघर्ष एवं दमन का हाथ रहता है। एडलर के अनुसार–''स्वप्न में उन समस्याओं के समाधान की चेष्टा की जाती है,जो आधिपत्य की भावना और हीन भावना के संघर्ष से उत्पन्न होती है।'' एक और हम श्रेष्ठ तथा महान बनना चाहते हैं,दूसरी और हम हीन भाव (style of life) कीक अभिव्यक्ति होती है। तथा ''स्वप्न व्यक्ति की जीवन–शैली तथा उसकी वर्तमान समस्या के बीच एक सेतु बनाने का प्रयास है।'' एडलर ने स्वप्नो का संबंध वर्तमान तथा भविष्य दोनों से भी माना है। एडलर स्वप्नों में अपनी भावी जीवन के कार्यो का पूर्वाभ्यास (Rehearsal) करता है। उसके अनुसार,स्वप्न में व्यक्ति ऐसे कार्यो को होते पाता है,जिनका संबध उसकी समस्याओं से रहता है और जिसके कारण वह अपने किसी प्रकार के हीन–भाव को दूर कर अपना आधिपत्य स्थापित करने में समर्थ हो सकता है।

फ्रायड ,युंग और एडलर तीनों के सिध्दांतो की पुष्टि के लिए ऐसे स्वप्न क विश्लेशषण करेंगे जो स्वप्न एक नवयुवक का है, जो स्नातक था,परंतु नौकरी के लिए लाख कोशिश करने पर भी वह बेकार बैठा था।एक रात उसने एक स्वप्न देखा–''मैं अपनी माँ और बहन के साथ सिढियों पर चढ रहा हूँ। जैसे ही हम लोग चढते–चढते ऊपर पहुँचे, हमें पता चला कि मेरी बहन को शीघ्र बच्चा होनेवाला है।

फ्रायड के अनुसार, इस स्वप्न की व्याख्या इस प्रकार है–इस स्वप्न में बचपन में दमित कामेच्छा उत्पन्न होती है। ''सिढी चढना'' यौन–संभोग का प्रतीक है।''माँ'' और ''बहन'' का साथ होना बाल्यकाल की काम वृत्ति के प्रतिक हैं। छत पर पहुँचने पर बच्चे का जन्म होना यौन–संभोग का प्रतिफल है।

युंग ने इस स्वप्न को समझने के लिए स्वतंत्र साहचर्य (Free association) की विधि का सहारा लिया। उसने इस विधि के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि यह स्वप्न उस युवक की वर्तमान परिस्थिति तथा भावि जीवन की झलक अभिव्यक्त करता है। ''माँ'' कर्तव्यहीनता का बोधक है, ''बहन'' सच्चे प्रेम का द्योतक है। ''सीढी पर चढना'' भविष्य में उन्नति करने का प्रतिक है तथा ''बच्चे का होना'' उस युवक के भावी जीवन के सुखमय पहलू का द्योतक है।

एडलर के अनुसार, ''सीढियों पर चढना'' अपनी कठनाईयों पर विजय प्राप्त करने का बोधक है। ''माँ'' और ''बहन'' का साथ में होना युवक में आत्म–निर्भरता के अभाव का बोधक है। अर्थात् वह दूसरों के बिना अपना कार्य सफलतापूर्वक नही कर सकता।

निष्कर्षतः तीनों मनोवैज्ञानिक सिध्दांतो की धारणओ,संघटको तथा व्याख्याओं में अंतर है,किंतु एकान्तरुप से कोई भी सिध्दांत स्वप्न के सभी पक्षो की समुचित व्याख्या करने में समर्थ नही है। इस संदर्भ में किस्कर (Kisker,1985) का कथन अधिक युक्तिसंगत है कि ये सभी सिध्दांत एक–दूसरे के पूरक है।

जैन साहित्य में स्वप्न के प्रकार–

भगवती सूत्र की टीका मे स्वप्नो के पाँच प्रकार बताये हैं–

1) यथातथ्य 2)प्रतानस्वप्न 3)चिन्तास्वप्न 4)तद्विपरीत स्वप्न और

5)अव्यक्तदर्शन स्वप्न।

1) यथातथ्य स्वप्न – व्यक्ति इस स्वप्न में जिस प्रकार के पदार्थ को देखता है वैसा ही होनाा यथातथ्य स्वप्न हे। जैसे किसी पुरुष ने स्वप्न देखा कि किसी ने उसे हाथ में स्वर्ण मुद्रा दी है और वह पुरुष जागृत हो जाता है और उसका स्वप्न सत्य हो जाता है वह सचमुच अपने हाथ में स्वर्ण मुद्रा देखता है। उसे यथातथ्य स्वप्न कहते है।

2) प्रतान स्वप्न– ये विस्तार वाले स्वप्न होते है,जो दीर्घकाल तक स्थिर रहते है। ये सत्य भी होते है और असत्य भी होते है। उसे प्रतान स्वप्न कहते है।

3) चिन्ता स्वप्न– जागृत अवस्था में जिस विषय का चिंतन किया गया हो उसे निद्रा (सुप्तावस्था) में दिखाई देना उसे चिन्तास्वप्न कहते है।

4)तद्विपरीत स्वप्न– स्वप्न मे जैसी कोई वस्तू दिखाई दी जाग्रतावस्था में उससे विपरीत वस्तु की प्राप्ति होना तद्विपरीत स्वप्न है।

5) अव्यक्तर्षन– जिसमें स्वप्नार्थ का अस्पष्ट अनुभव होता है ऐसा स्वप्न अव्यक्त–अस्पष्ट दर्शन स्वप्न कहलाता है। अर्थात् स्वप्नावस्था में दृष्ट पदार्थ का जागृत अवस्था में भूल जाना ''अव्यक्तदर्शन'' स्वप्न कहलाता है।

स्वप्नों के प्रकार–

कल्पसूत्र, भगवतीसूत्र तथा स्वप्नसार समुच्चय में स्वप्नों के असंख्य प्रकार बताये हैं, किन्तु 72 प्रकार के स्वप्नों का उल्लेख मिलता हैं उनमें से 42 प्रकार के स्वप्न जघन्य फल,30 स्वप्न मध्यम फल तथा 14 स्वप्न सर्वोत्तम फल देने वाले होते हैं। जो विशिष्ट महापुरुषों (तीर्थकरों)की माताएँ देखती है। (विशेष जानकारी के लिए देखें 'स्वप्नसार समुच्चय' की पुस्तक की भूमिका तथा 'कल्पसूत्र' विस्तार भय के कारण यहाँ केवल संक्षिप्त उल्लेख ही अपेक्षित हैं।)

आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान में स्वप्नों के प्रकार–

स्वप्न व्यक्तिगत अनुभवों संबंधित होते है। ये आत्मगत और आत्मकेंद्रीत होते है।अतः स्वप्नों मे विविधता एवं विचित्रता बहुत अधिक होती है। इसलिए स्वप्नों का वर्गीकरण सरल नहीं है। वे स्वप्न जो व्यक्तियों को अधिकतर दिखाई देती है। उन स्वप्नों के मुख्य प्रकारों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से हैं–

1)इच्छापूर्ति स्वप्न–(wishfullfillment Dreams)

व्यक्ति बहुत से स्वप्न देखता है,जिनके उसकी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति होती है। कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत हैं कि सभी प्रकार के स्वप्न किसी न किसी रुप में इच्छापूर्ति के साधन होते हैं जिन स्वप्नों से स्वप्नकर्ता की इच्छाओं की पूर्ति होती है, वह इच्छापूर्ति स्वप्न कहलाते है।

2)चिन्ता स्वप्न (anxiety Dreams)–

इन स्वप्नो के माध्यम से स्वप्नद्रष्टा की किसी न किसी चिन्ता अभिव्यक्ति होती है,ऐसे स्वप्नों को चिन्ता स्वप्न कहते है। ऐसे स्वप्नों को देखकर स्वप्नद्रष्टा पसीने–पसीने हो सकता है, उसकी नींद टूट सकती है तथा बैचेनी अनुभव कर सकता है।

3) प्रतिरोध स्वप्न –(protest Dream)–

इन स्वप्नों में व्यक्ति सामाजिक नियमों के विरुध्द, अपने दुश्मनों के विरुध्द अथवा किसी नियम या व्यक्ति का विरोध करते हुए देखता हैं, ऐसे स्वप्न प्रतिरोध कहलाते हैं।

4)दण्ड स्वप्न– (punishment Dreams)–

ठन स्वप्नों में व्यक्ति अपने आपको दण्छ या कष्ट पाता हुआ देखता हैं, वे दण्ड स्वप्न कहलाते है। इनमें स्वप्नद्रष्टा अपने आपको पीटता या दूसरों द्वारा परेशान होता हुआ देख सकता है।

5) भविश्य स्वप्न (Future Dream)–

इन स्वप्नों क संबंध स्वप्नद्रष्टा के अनुभवों से होता है। ऐसे स्वप्नों में व्यक्ति यह देख सकता है कि उसके घर मेहमान आने वाले हैं, बच्चा होने वाला हैं अथवा उसके व्यापार या नोकरी में तरक्की हो रही है और वह बडा आदमी बनता जा रहा है। ऐसे स्वप्न भविष्य स्वप्न कहलाते हैं।

6द्ध गति स्वप्न– (kinesthetic Dream)

जब स्वप्नों में व्यक्ति गति करता हुआ देखता है,तो ऐसे स्वप्न गति कहलाते है। ऐसे स्वप्नों में व्यक्ति अपने आपको खेलता,दौडता,भागता और तैरता हुआ देखता है।

7) पुनरावर्तक स्वप्न– (Re-current Dreams)

ऐसे स्वप्न व्यक्ति को अक्सर तथा बार–बार दिखाई देते है।

8)लकवा मारने के स्वप्न– (paralytic Dream)

ऐसे स्वप्नों मे व्यक्ति अपने आपको किसी प्रतीक के संबंध में देखता है कि उसके किसी अंग विशेष को लकवा मार गया है अथवा संपूर्ण शरीर में लकवा मार गया है वह हिलने–झुलने के काबिल नहीं हैं।

9) मृत व्यक्तियों के स्वप्न– (Dreams of the Dead)

इन स्वप्नों में व्यक्ति अपने आपको मरा हुआ देखता है या किसी प्रियजन को मरा हुआ देखता है या मरे हुए व्यक्तियों को जीवित देखता है। उनसे बाते करता हैं और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करता है।

10) सामूहिक स्वप्न–(Collective Dream)

ऐसे स्वप्न जो एक ही समय में समानरुप से कई व्यक्तियों को दिखाई देते हैं।जब इन व्यक्तियों को किसी घटना या किसी व्यक्ति के बारे में समान अनुभव,समान अभिवृत्तियाँ और समान भावनाएँ आदि हों तो ऐसे स्वप्न दिखाई देते हैं। ऐसे स्वप्न दुर्लभ होते हैं।14

जैसे ''त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित'' में वर्णन आता है कि –भगवान ऋषभदेव को निराहार रहते हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया और विचरण करते हुए भगवान गजपुर (हस्तिनापूर) पधारे। उसी रात्री को अर्ध्दनिद्रित अवस्थामें गजपुर के अधिपती बाहुबली के पौत्र तथा सोमप्रभ राजा के पुत्र श्रेयांस ने स्वप्न देखा की सुमेरु पर्वत श्यामवर्ण का हो गया है।उसे मैंने अमृत–कलश से अशिषिक्त कर पुनः चमकाया । उसी रात्री को नगरश्रेष्ठि सुबुध्दि ने स्वप्न देखा कि ,सूर्य में संस्थापित कर दिया। राजा सोमप्रभ ने भी उसी दिन की पश्चिम रात्रि में स्वप्न देखा कि एक महान् पुरुष शत्रुओं से युध्द कर रहा है।

श्रेयांस ने उसे सहायता प्रदान की, जिससे शत्रु का बल नष्ट हो गया। प्रातःकाल सभी स्वप्न पर चिंतन,मनन करने लगे। स्वप्न का फल निकला श्रेयांस को विशिष्ट लाभ की प्राप्ति होने वाली है।स्वप्न के फलस्वरुप एक वर्ष से निराहारी तपस्वी भगवान ऋषभदेव को श्रेयांस ने वैशाख शुक्ला तृतीया (अक्षयतृतीया) पर इक्षु रस का आहार दान दिया। भगवान ने वर्षितप का पारणा किया।अहोदानं।अहोदानं। से गगन गुंजायमान हुआ ।देवताओं ने पंचविध सुवृष्टि की। ठस सामुहिक स्वप्न का बडा ही महत्व है।

भारतीय मनोविज्ञान में स्वप्न के प्रकार–

आयुर्वेद ने सात प्रकार के स्वप्न बतलायेंहै । दृष्ट,श्रुत,अनुभूत,प्रार्थित,कल्पित,भाविक तथा दोज ये सात प्रकार है।चाश्रुष और श्रोत अनुभव तथा तद्व्यतिरिक्त इन्द्रियॉ तथा मन का अनुभव, मन ने जो अपेक्षा की है वह तथा मन ने जो कल्पना की है वह दोनों ही स्वप्न के कारण होते है।भाविक अर्थात् भावि घटनाओं का वर्तमान कालिक ज्ञान देने वाला स्वप्न । ऐस स्वप्न हो सकते है।इस बात को पाश्चात्य शास्त्रज्ञ भी मानने लगे है।?

स्वप्न का फल किसे और कब मिलताा है–

जैन शास्त्रानुसार जो व्यक्ति स्थिर,चित्त, शांत,दांत जितेन्द्रिय,धर्मभाव में रुचि रखनेवाला,धर्मानुरागी,प्रामाणिक, सत्यवादी, दयालु,श्रध्दालु और गृहस्थ के 21 उत्तम गुणोंसे युक्त हों, उसे जो स्वप्न आता है,वह निरर्थक नहीं जाता। कर्मानुसार

यथासमय प्रिय याअप्रिय फल शिघ्र मिलता है।

स्वप्न का फल कब मिलता है? तो ''स्वप्नानुसार समुच्चय'' पुस्तक मे बताया हैं कि–1) यदि रात के पहले प्रहर में स्वप्न देखता है, तो उसका फल एक वर्ष में मिलता है। 2) दूसरे प्रहर में देखे गये स्वप्न हा फल छः महिने में मिलता है। 3) तिसरे प्रहर में स्वप्न देखा है, तो एक महिने में उसका फल मिलता है। 4) रात्रि के चौथे प्रहर में स्वप्न देखे तो 15 दिन में 5) रात्रि की अंतिम दो घडी में स्वप्न देखता है,तो 10 दिन में और सूर्य उदित होते–होते स्वप्न देखे तो उसका तत्काल फल मिलता है। 6) बुरा स्वप्न देखने पर सोया रहना चाहिए तथा उसे किसी के सामने नही कहना चाहिए।इससे उसका बुरा फल नहीं मिलता है। 7) उत्तम स्वप्न देखने पर शीघ्र जाग्रत हो जाना चाहिए तथा उसे गुरुजनों के संमुख कहना चाहिए। इससे शुभ फल की प्राप्ति होती है, तथा शुभ स्व्प्न मूर्ख व्यक्ति को कभी न सुनाए वरना वह स्वप्न का जैसा फल बताएगा वैसा ही अव्यवस्थित और अनिच्छित फल की प्राप्ति होगी। स्वप्न को उत्तम शास्त्री के सामने कहने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। अयोग्य को बताने से अच्छा है गौ के कान में या मन में ही रख लेना चाहिए। 8) यदि पहले अच्छा स्वप्न देखकर बाद में बुरा स्वप्न देखां हैं, तो बुरे स्वप्न का फल मिलता है और 9) यदि पहले बुरा स्वप्न देखकर बाद में अच्छा स्वप्न देखता हैं, तो अच्छे स्वप्न का फल ही मिलता है। इस प्रकार स्वप्न हमारी चेतन–अचेतन शक्तियो पर इष्टकारी या अनिष्टकारी प्रभाव छोडकर हमारी चेतना को प्रसन्न या आहत करता है।

उपसंहार–

इस प्रकार पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक फ्रायड एवं युंग ने स्वप्नों की जो व्याख्यायेंदी हैं, वे एकांगी एवं अपूर्ण है। इनसे पूरे स्वप्न विज्ञान को नही जाना सकता। उसके एक पक्ष को ही जाना जा सकता है। यह संकीर्ण दृष्टी मात्र है। क्योंकि एक फूल को देखकर मात्र यह कह देना कि इसमें इतनी पंखुडियाँ है,ऐसा रंग है। इसका पौधा इतना बडा होता हैं। उसकी उम्र इतनी है। इसमें सुगंध है, इससे इत्र बनाया जा सकता है आदि एकांगी दृष्टि से यह जान पाये कि रोगी एवं स्वस्थ व्यक्ति के स्वप्नों में क्या अंतर होता है? महत्वाकांक्षी के स्वप्न किस प्रकार के होते है ? कामुक व्यक्ति के स्वप्न किस प्रकार के होतें हैं ? सुषुप्ति एवं समाधि की स्थिति में व्यक्ति किस प्रकार का अनुभव करता है ? क्या स्वप्न भविष्य की सूचनाएँ भी देते हैं ? या ये मन की कोरी कल्पना मात्र हैं या इनमें वास्तविकता भी है ?

आदि का अध्यपन फ्रायड नहीं कर पाये तथा इन्होंने मात्र इनको दमित इच्छाओं का परिणाम बता दिया। किंतु जबकि अध्यात्मवादियों ने स्वप्न का जितना सूक्ष्म एवं गहरा चिंतन किया है उस सीमा तक पाश्चात्य मनोविज्ञान अभी तक नही पहुँच पाया है। मन के गूढ रहस्यों को कुछ स्थूल प्रश्नों से नहीं जाना जा सकता।

फ्रायड एक मनोवैज्ञानिक थे तथा अध्यात्मविद्या से अनभिज्ञ थे। उनका संबंध मनोरोगियों तक ही सीमित था। उन्होंने ऐसे ही रोगियों के स्वप्नों का अध्ययन किया जो मानसिक रुप से रुग्ण थे । वे पूरे स्वप्न विज्ञान को नही जान सके जिसे कोई अध्यात्मवादी ही जान सकता है।

जिसे शरीर रचना का पूर्ण ज्ञान है,शरीर,मन,बुध्दि,आदि को स्वतन्त्र इकाई मान लेना ही सबसे बडा भ्रम है,जिसको जानने से शरीर का पूर्ण ज्ञान नहीं होता। आत्मा (चेतना)को संयुक्त करके इसके पूर्ण स्वरुप को जाना जा सकता है। जिस प्रकार भगवान महावीरने अनेकान्तवाद भी छः अंधे द्वारा हाथी की समग्र रुप से व्याख्या करने पर ही स्वप्न के वास्तविक स्वरुप को समझा जा सकता है। एकांगी रुप से स्वप्न की व्याख्या संभव नहीं है।

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

1) दशोरा नंदलाल – मन की अद्भूत शक्तियाँ, पृ 127–8
2) टीकाकार,पू. घासीलालजी म. भगवती सूत्र (द्वादशोभाग) पृ.190–1,195
3) सुलैमान मोहम्मद–मनोरोग विज्ञान पृ.118
4) वर्मा एवं श्रीवास्तव–आधुनिक असामान्य मनोवि. पृ. 174–5
5) मखीजा एवं मखीजा–अपसामान्य मनोविज्ञान,पृ 41
6) क) वर्मा एवं श्रीवास्तव–आधुनिक असामा. मनोवि. पृ.175–6
ख) सुलैमान मोहम्मद–मनोरोग विज्ञान, पृ. 118–20
7) शर्मा रामनाथ–सामान्य मनोवि. की रुपरेखा,पृ. 89–90
8)अनुवादक–जैन दुर्गाप्रसाद–स्वप्नसार समुच्चय (भूमिका,पृ.15)
9)अनु. जैन दुर्गाप्रसाद–स्वप्नसार समुच्चय,पृ. 24,16–7
10)विद्यालंकार जगदीशप्रसाद–भारतीय मनोवि.,पृ.158
11) सुलैमान मोहम्मद –मनोरोग विज्ञान,पृ.124–36
12) टीकाकार,पू.घासीलालजी म.भगवती सू. (द्वादशो भाग) पृ. 191–4
13) (क) संपादक–महोपाध्याय विनयसागर –कल्पसूत्र, सू 71
(ख) भगवतीसूत्र–मधुकर मुनि (भाग–प्प्)पृ.579–80
(ग) अनु. जैन दुर्गाप्रसाद–स्वप्नसार समुच्चय,(भूमिका पृ.25–6)
14) वर्मा एवं श्रीवास्तव–आधुनिक असामा. मनोवि. पृ. 177
15) क) आचार्य देवेन्द्र मुनि– ऋषभदेव–एकपरिशीलन,पृ. 167–8

ख) श्री गणेश ललवानी–त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित(प्रथम पर्वगत)पृ.149–42
16) विद्यालंकार जगदीशप्रसाद–भारतीय मनोवि. पृ. 160
17) अनुवादक–जैन दुर्गाप्रसाद–स्वप्नसार समुच्चय,(भूमिका.पृ.26–7)

Lkk/oh& i`’k l kJhßek{kkß

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org